Q. सिन्धुकालीन लोगों के धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालें?

Ans: सिन्धुकालीन लोग भी प्राचीन विश्व की अन्य सभ्यताओं के समान ही बहुदेववादी और प्रकृतिपूजक थे I वे प्रकृति की विभिन्न शक्तियों यथा- अग्नि, वृक्ष, जल, पशु आदि की पूजा करते थे I उनकी धार्मिक प्रथाओं और पूजा-पाठ की विधियों के विषय में यथेष्ट जानकारी नहीं मिलती है, परंतु उत्खनन में प्राप्त मूर्तियों और मोहरों पर पाये गये चित्रों के आधार पर उनके धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है I

→ **प्रमुख देवता या शिव की पूजा** :- सिंधु सभ्यता के प्रमुख देवता शिव थे। विभिन्न रूपों में इनकी मूर्तियाँ एवं चित्र पायी गई है I इनमें सबसे प्रमुख 'योगी' की मुद्रा की "मूर्ति" का चित्र है I एक मुहर पर तीन मुख और सींगवाले योगी की मुद्रा अंकित है, जो पालथी मारकर बैठा हुआ है I इसके चारों तरफ क्रमशः हाथी, बाघ, गैंडा तथा भैंस खड़े है I योगी के आसन के नीचे दो मृगों की आकृतियाँ है। ये जानवर देवता के वाहन के रूप में रहे होंगे I इस मूर्ति को पुरातत्ववेत्ता "योगीश्वर" एवं 'पशुपति शिव' की मूर्ति मानते है I

शिव की उपासना के प्रमाण अन्य मुहरों से भी मिलते हैं। इनमें शिव के नारी-रूप, नागधारी-रूप, धनुर्धर रूप एवं नर्तक-रूप का चित्रण किया गया है I इन साक्ष्यों के आधार पर मार्शल तथा अन्य विद्वानों का मत है कि सिंधुवासी शिव के प्रारंभिक स्वरूप की पूजा करते थे तथा शिव उनके प्रमुख देवता थे I

→ **पृथ्वी की पूजा या मातृदेवी की पूजा** :- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा अन्य स्थानों से मिट्टी की मूर्तियाँ बड़ी संख्या में प्राप्त हुई है I इन्हें पृथ्वी या "मातृदेवी (Mother Goddess) का प्रतीक माना गया है I सिंधु सभ्यता से प्राप्त मृणमूर्तियों में शिशु को दूध पिलाते हुए नारी को दिखाया गया है I एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से एक पौधे को निकलता हुआ दिखाया गया है, जो मातृदेवी को उर्वरता के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है I एक मुहर पर प्राप्त चित्र को देखने से पता चलता है कि संभवतः मातृदेवी को प्रसन्न करने के लिए नरबलि भी दी जाती थी I मातृदेवी सिंधु-सभ्यता की प्रमुख देवी के रूप में विभिन्न स्वरूपों में दृष्टिगोचर होती है I

→ **प्रजनन-शक्ति की पूजा** :- शिव के अतिरिक्त सिंधुवासी प्रजनन अंगों -लिंग एवं योनि की भी पूजा करते थे। इसके द्वारा वे ईश्वर की सर्जनात्मक शक्ति के प्रति अपनी भक्ति की भावना प्रकट करते थे I यह भी संभव है कि लिंग पूजा का संबंध शिव पूजा से रहा है I हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से बड़ी संख्या में पत्थर, चीनी मिट्टी तथा सीप के बने लिंग मिले है I लिंग छोटे और बड़े दोनों आकारों के पाये गये है I ऐसा माना जाता है कि बड़े लिंगों को किसी निश्चित स्थान पर प्रतिष्ठित कर पूजा किया जाता होगा तथा छोटे लिंगों को ताबीज के रूप में पहना जाता होगा I इससे बुरी शक्तियों से सुरक्षा होती होगी I

पत्थर की बनी योनियाँ भी मिली है, जिसकी पूजा होती थी I इन प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सिंधुघाटीवासी संभवतः मूर्तिपूजा में विश्वास रखते थे I

→ **वृक्ष पूजा** :- सिंधु-सभ्यता में वृक्ष पूजा भी प्रचलित थी I कुछ वृक्षों की पूजा की पूजा होती थी तथा कुछ को देवी-देवताओं या इनके रूपों का आवास मानकर उनकी पूजा की जाती थी I वृक्षों में सबसे प्रमुख पीपल और नीम था I अनेक मुहरों पर इन वृक्षों के तथा इनसे संबद्ध देवी-देवताओं के चित्र उत्कीर्ण किये गये थे I मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर में दो जुड़वाँ पशुओं के सिरों पर पीपल की पत्तियाँ दिखाई गई है I अन्य मुहरों में वृक्ष देवता के सम्मान में बकरी की बलि देने का दृश्य एवं पशुओं तथा सर्पों द्वारा वृक्षों की रक्षा करने का चित्र भी अंकित किया गया है I इनसे वृक्षपूजा की महत्ता स्पष्ट होती है I

→ **जल एवं प्रतीक पूजा** :- जलदेवता की या नदी की पूजा करने की प्रथा प्रचलित थी I नदियों ने प्राचीन सभ्यताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्नान को धार्मिक अनुष्ठान का दर्जा दिया गया था। मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार

Scanned with CamScanner

इसी उद्देश्य से बनवाया गया था I इसके अतिरिक्त श्रृंगस्तंभ और स्वास्तिक के चित्र भी मुहरों पर मिले है, जो संभवतः किसी देवी-देवताओं के प्रतीक के रूप में पूजे जाते होंगे I लोथल और कालीबंगा से यज्ञ-वेदिकाओं (fire altars) भी मिली हैं I इनसे अग्नि पूजा एवं बलि की प्रथा का प्रमाण मिलता है I

→ **पशु एवं नाग पूजा :** सिंधुवासी पशुओं तथा सर्पों की भी पूजा करते थे I इनकी पूजा डर से या इन्हें देवताओं का वाहन मानकर किया जाता था I मुहरों पर अनेक पशुओं के चित्र मिले हैं I कुछ पशुओं की मूर्तियाँ भी मिली है I मानव एवं पशुओं की आकृतियों को मिलाकर अनेक मूर्तियाँ बनाई जाती थी I इससे स्पष्ट होता है कि सिंधुवासी इनमें देवत्व के अंश की कल्पना कर इनकी पूजा करते थे I पशुओं में सबसे प्रमुख कूबड़दार साँढ़ (humped bull) था I शिव के साथ दिखाए गए पशुओं (बाघ, भैंस, गैंडा) की भी पूजा की जाती थी I नागपूजा की प्रथा भी प्रचलित थी I

→ **पुरोहित एवं मंदिर :-** सिंधु सभ्यता में पुरोहितों की स्थिति क्या थी, इनके विषय में कोई स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है I सिंधु-सभ्यता में मंदिर थे या नहीं, यह भी निश्चित नहीं है I

प्रसिद्ध पुरातत्वेता सर मॉर्टिमर व्हीलर की धारणा है कि मोहनजोदड़ो का एक भवन जो विशाल चबूतरे पर बना हुआ था तथा जहाँ से पत्थर की खंडित मूर्तियाँ प्राप्त हुई है, मंदिर का अवशेष है, परंतु अब भी मंदिर के अस्तित्व का प्रमाण संदिग्ध ही है I

→ **धार्मिक प्रथाएँ :-** सिंधुघाटी के निवासियों के धार्मिक रीति-रिवाजों तथा पूजा-पाठों की पद्धति के विषय में स्पष्ट जानकारी नहीं है I मुहरों को देखने से पता चलता है कि देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि चढ़ाई जाती थी I धार्मिक अवसरों पर नृत्य-गान की परिपाटी प्रचलित थी I यहाँ के निवासी मरणोत्तर जीवन में विश्वास रखते थे I अंधविश्वास भी प्रचलित था I बुरी शक्तियों से बचने के लिए तावीज पहने जाते थे तथा जादू-मंतर का सहारा लिया जाता था I

Dr. [illegible] Kr.
9534808571

Scanned with CamScanner